अनुक्रम

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
१	प्रस्तावना	१
२	विषय-चयन और मौलिकता	१
३	योगदान	२
४	शोध दृष्टि	३
५	पूर्ववर्ती शोधकार्य	३
६	विषयानुक्रम	४
७	प्रबंध परिचय	९
८	धन्यवाद ज्ञापन	१२
९	परिशिष्ट	१४

प्रस्तावना :

स्वतंत्रता के पश्चात् हिन्दी गद्य की नवीन विधाओं में व्यंग्य साहित्य ने दिन प्रति दिन प्रगति की है । हरिशंकर परसाई, रवीन्द्रनाथ त्यागी, शरद जोशी, नरेन्द्र कोहली, श्रीलाल शुक्ल, लतीफ घोंघी, सूर्यबाला, डॉ.बालेन्दुशेखर तिवारी, डॉ.शंकर पूर्णताम्बेकर, डॉ.बरसानेलाल चतुर्वेदी, के.वी.सक्सेना, डॉ.इन्द्रनाथ मदान, डॉ.सुदर्शन मजीठिया, यशवंत कोठारी, डॉ.प्रेम जनमेजय इत्यादि व्यंग्यकारों ने व्यंग्य साहित्य के सृजन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है । आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्यंग्य पहुँच गया है । वर्तमान में व्यंग्य का प्रचार प्रसार इतना विस्तृत व्यापक होने का कारण कम से कम शब्दों में तीक्ष्ण तेजस्वी भाषा में इसकी अभिव्यक्ति । इसलिए व्यंग्य विधा आज इतनी लोकप्रिय हैं । व्यंग्य समाज की विकृत स्थितियों को खोलने का आईना है । सामाजिक जीवन में फैली हर बुराई पर व्यंग्य लेखक का ध्यान रहता है और वह उसे अपने वास्तविक रूप में सामने रख देता है । तभी तो व्यंग्य को जीवन का साक्षात्कार कहा जा सकता है ।

विषय चयन और मौलिकता :

प्रारंभ से ही व्यंग्य साहित्य के प्रति मेरी विशेष अभिरुचि रही है । स्नातक तथा अनुस्नातक के अध्यापन के समय हरिशंकर परसाई तथा श्रीलाल शुक्ल की व्यंग्य रचनाएँ पढ़ाने का सुअवसर भी प्राप्त हुआ है । अनुस्नातक में व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल की प्रसिद्ध व्यंग्यपरक औपन्यासिक रचना 'राग दरबारी' पढ़ाने के उपरांत व्यंग्य साहित्य पढ़ने में सविशेष रुचि हुई । इसी दौरान उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल का एक अन्य उपन्यास 'मकान' पढ़ा । बाद में उनकी कुछ श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ पढ़ने का मौका मिला । इस पश्चात् व्यंग्य साहित्य को लेकर शोध-कार्य आरंभ करने का विचार मन में कई बार आया, किन्तु परिस्थितियों ने साथ नहीं दिया । फलस्वरूप अध्यापक होने के सत्रह साल तक शोध-कार्य से वंचित रह गया ।

लतीफ घोंघी, हरिशंकर परसाई आदि व्यंग्यकारों पर समग्रतया शोध-कार्य को पढ़ने के बाद लगा कि श्रीलाल शुक्ल की व्यंग्य रचनाओं को लेकर काम किया जा सकता है । कथाकार तथा व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' तथा 'मकान' उपन्यासों ने तो मुझे प्रभावित किया ही था, दूसरा श्रीलाल जी के समग्र व्यंग्य-साहित्य को लेकर किसी अनुसंधित्सु का कोई अध्ययन संशोधन मेरी दृष्टि में नहीं आया है । ऐसे में मैंने मन से निश्चय कर लिया कि व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल पर शोध-कार्य किया जाय । अपने मन के विचार मैंने शोध निर्देशिका डॉ.विमलेश तेवटिया के सामने रखे । उन्होंने मेरी रुचि तथा श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य-साहित्य की पूरी जानकारी प्राप्त कर शुक्ल जी के व्यंग्य-साहित्य पर काम करने की अनुमति दी । तत्पश्चात् विषय चयन हुआ- **"व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल ।"**

योगदान :

हिन्दी व्यंग्य को गहन गंभीर दृष्टि और नूतन अभिव्यंजना देने में श्रीलाल शुक्ल के योगदान को भूलाया नहीं जा सकता । उनके व्यंग्य साहित्य में अनुभव, सूक्ष्म दृष्टि तथा कल्पनाशीलता का सुभग समन्वय देखा जाता है । उत्तर प्रदेश शासन के अनेक उच्च पदों को शोभायमान करनेवाले शुक्ल जी को अपनी व्यंग्य रचनाओं की जमीन ढूँढ़ने कहीं इधर-उधर जाना नहीं पड़ा है । अपने कार्यालय के कुरूक्षेत्र से ही उन्होंने सामग्री इकट्ठी की है ।

अब तक शुक्ल जी के नौ व्यंग्य संकलन प्रकाशित है । यथा (१) अंगद का पाँव (१९५८) (२) यहाँ से वहाँ (१९७०) (३) मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ (१९७९) (४) उमराव नगर में कुछ दिन (१९८६) (५) कुछ जमीन पर कुछ हवा में (१९९३) (६) आओ बैठले कुछ देर (१९९५) (७) अगली शताब्दी का शहर (१९९६) (८) जहालत के पचास साल (२००४) (९) खबरों की जुगाली (२००६) इसके अतिरिक्त 'राग दरबारी' (१९६८) तथा 'मकान' (१९७६) दो औपन्यासिक कृतियाँ भी व्यंग्य को उजागर करती है ।

शुक्ल जी के व्यंग्य साहित्य के केन्द्र में समाज राजनीति, संस्कृति, शिक्षा, प्रशासन, साहित्य इत्यादि है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में इन सबको स्पष्ट करने का हमारा उद्देश्य है ।

शोध दृष्टि :

मैंने यथा संभव शोध प्रविधि के नियमों व सिद्धांतों का अनुसरण करने का प्रयास किया है । प्रत्येक अध्याय के अंत में संदर्भानुक्रम दिया गया है । अपने शोध-कार्य में मैंने यथाशक्य पूर्वाग्रहरहित तटस्थ व वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया है । साथ ही शोध-कार्य अंतर्गत निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास रहा है ।

पूर्ववर्ती शोधकार्य :

व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल बहुमुखी प्रतिभा संपन्न लेखक रहे हैं । जिनको लेकर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से अनेक शोध-कार्य हुए हैं । जिनमें से मुझे प्राप्त पूर्ववर्ती शोध-कार्य निम्नलिखित है :

१. श्रीलाल शुक्ल की दुनिया : अखिलेश - राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली

२. व्यंग्यात्मक उपन्यास तथा रागदरबारी : नंदलाल कल्ला
- अमित प्रकाशन, जोधपुर

३. रागदरबारी कृति से साक्षात्कार : चंद्रप्रकाश मिश्र
- संजय प्रकाशन, दिल्ली

४. श्रीलाल शुक्ल एक अध्ययन : डॉ.सुरेश पटेल
- साधना प्रकाशन, कानपुर

५. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में युग एवं समाज : डॉ.प्रतिक्षा पटेल
- दर्पण प्रकाशन,

६. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान : डॉ.पी.वी.कोटमे
- चंद्रलोक प्रकाशन

विषयानुक्रम

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय : व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल : व्यक्तित्व व कृतित्व

- जन्म
- स्थान
- माता-पिता
- बचपन
- शिक्षा-दीक्षा
- जीविकोपार्जन
- विवाह
- पारिवारिक जीवन
- प्रेरणा स्त्रोत
- साहित्यिक यात्रा
- पुरस्कार, सम्मान एवं पदोन्नति
- निष्कर्ष
- संदर्भानुक्रम

द्वितीय अध्याय : व्यंग्य : स्वरूप और सिद्धांत, प्रकार तथा परम्परा

- व्यंग्य : स्वरूप और सिद्धांत
- व्यंग्य की परिभाषा
  - भारतीय आलोचकों का दृष्टिकोण
  - पाश्चात्य विचारकों का दृष्टिकोण
- व्यंग्य के तत्त्व
- व्यंग्य के प्रकार
- व्यंग्य लेखन की परम्परा
- निष्कर्ष

  संदर्भानुक्रम

तृतीय अध्याय : श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य : विषयवस्तु

- अंगद का पाँव
- यहाँ से वहाँ

- मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ
- उमरावनगर में कुछ दिन
- कुछ जमीन पर कुछ हवा में
- अगली शताब्दी को शहर
- जहालत के पचास साल
- खबरों की जुगाली
- रागदरबारी (उपन्यास)
- मकान (उपन्यास)
- निष्कर्ष
  संदर्भानुक्रम

चतुर्थ अध्याय : समाज विषयक व्यंग्य

- अंधविश्वास एवं सामाजिक रीति-रिवाज
- सामाजिक वैषम्य और शोषण
- सामाजिक प्रतिष्ठा और पाखण्ड
- शहर और देहाती समाज की तुलना
- मध्यमवर्ग के बाह्याडंबर पर व्यंग्य
- फिल्म
- जाति-भेद
- स्वार्थपरकता और परस्पर सन्देह
- इर्ष्या, जलन और व्यक्ति का खोखलापन
- परिवार नियोजन सम्बन्धी व्यंग्य
- डिनर डिप्लोमेसी पर व्यंग्य
- सम्बन्धों का बदलाव
- नारी का शोषण
- संवेदना का अभाव
- निष्ठा पर व्यंग्य
- पीढ़ी परिवर्तन
- भ्रष्टाचार
- उच्चवर्ग बनाम नैतिकता की सड़ांध
- मध्यमवर्गीय लोगों का शौक
- पर्यावरण पर व्यंग्य
- मनुष्य स्वभाव
- महँगाई

- खोखली परंपराओं पर व्यंग्य
- वर्तमान सीरियलों पर व्यंग्य
- वर्तमान व्यवस्था पर व्यंग्य
- निष्कर्ष

  संदर्भानुक्रम

पंचम अध्याय : राजनीति तथा प्रशासन विषयक व्यंग्य

- **राजनीति विषयक व्यंग्य :**

  १. सत्तालोलुपता
  २. नेता चरित्र
  ३. नेता की असंतुष्टि तथा दलबदल
  ४. शिष्टाचार का अभाव
  ५. नेताओं के झूठे वचन
  ६. नेताओं की लालची प्रवृत्ति
  ७. नेताओं के आपसी झगड़े
  ८. चापलूसी
  ९. पराजित नेता की व्यथा
  १०. प्रतिष्ठित राजनेताओं पर व्यंग्य
  ११. अवसरवादी राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य

- **प्रशासनिक व्यंग्य :**

  १. प्रशासनतंत्र का भ्रष्टाचार
  २. घूसखोरी
  ३. नौकरशाही
  ४. न्यायालयों पर कटाक्ष
  ५. कर्तव्यहीनता
  ६. घोटालों पर व्यंग्य
  ७. देश की दुर्दशा पर व्यंग्य
  ८. पुलिस व्यवस्था और डाकुओं पर प्रहार
  निष्कर्ष
  संदर्भानुक्रम

षष्ठ अध्याय : शैक्षिक विषयक व्यंग्य

- कवि सम्मेलन
- शिक्षा संस्थान
- शिक्षा का स्तर

- परीक्षा पद्धति
- अध्यापकों की निरीहता
- प्राचार्यों की कार्यनिष्ठा
- छात्रों में अनुशासनहीनता
- शिक्षा क्षेत्र की अन्य विसंगतियाँ
- स्वार्थपरता और कलह
- बिकाउ पदवियाँ
- काव्य गोष्ठियों पर व्यंग्य
- निष्कर्ष

  संदर्भानुक्रम

सप्तम अध्याय : संस्कृति तथा साहित्य जगत विषयक व्यंग्य

- **संस्कृति विषयक व्यंग्य :**

  १. संगीत कला
  २. चित्रकला
  ३. मूर्तिकला
  ४. दुःख परोपकार तथा वेदान्त दर्शन बनाम जीवन की विसंगतियाँ
  ५. यात्रा
  ६. नगरीय संस्कृति
  ७. पश्चिमी संस्कृति का कुप्रभाव

- **साहित्य जगत विषयक व्यंग्य :**

  १. मनोरंजन
  २. साहित्यकार
  ३. साहित्य

  निष्कर्ष
  संदर्भानुक्रम

अष्टम अध्याय : भाषा शैली अभिव्यंजना शिल्प

१. पात्रानुकूल भाषा प्रयोग
२. वाक्य संरचना
३. आलंकारिक भाषा
४. भाषा की लाक्षणिकता (मुहावरें, कहावत-लोकोक्तियाँ)
५. शब्द योजना (संस्कृत के तत्सम शब्द, युग्म शब्द, अंग्रेजी शब्द, अरबी फारसी शब्द, स्थानीय भाषा के विशिष्ट शब्द-गीत)

शैली प्रयोग :

१. वर्णनात्मक शैली
२. विश्लेषणात्मक शैली
३. पत्र-शैली
४. संवाद शैली
५. संस्मरणात्मक शैली
६. प्रतीकात्मक शैली
७. प्रश्न शैली
८. व्यंग्य शैली
९. काव्यात्मक शैली
१०. तुलनात्मक शैली
११. रिपोर्ताज शैली
१२. किस्सागोई शैली
१३. बिम्ब या चित्रशैली
निष्कर्ष
संदर्भानुक्रम

नवम अध्याय : उपसंहार

परिशिष्ट

प्रकरण संक्षिप्ति एवं प्रबंध परिचय :

अध्ययन की सुविधा हेतु प्रस्तुत महाशोध प्रबंध को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है -

१. व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल : व्यक्तित्व व कृतित्व

२. व्यंग्य : स्वरूप और सिद्धांत, प्रकार तथा परम्परा

३. श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य : विषयवस्तु

४. समाज विषयक व्यंग्य

५. राजनीति तथा प्रशासन विषयक व्यंग्य

६. शैक्षिक विषय व्यंग्य

७. संस्कृति तथा साहित्य जगत विषयक व्यंग्य

८. अभिव्यंजना शिल्प (भाषा शैली)

९. उपसंहार

प्रथम अध्याय में व्यंग्यकार श्रीलाल शुक्ल का जीवन परिचय दिया गया है । इसके अंतर्गत शुक्ल जी का जन्म, स्थान, माता-पिता, बचपन, शिक्षा-दीक्षा, जीविकार्जन, विवाह, पारिवारिक जीवन, प्रेरणास्त्रोत, साहित्य यात्रा, पुरस्कार, सम्मान एवं पदोन्नति इत्यादि के साथ अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है । शुक्ल जी की प्रतिभा बहुआयामी है । वे एक बहुप्रसिद्ध उपन्यासकार रहे हैं । इस उपन्यास के अतिरिक्त नौ व्यंग्य संकलन, दो कहानी संग्रह दो निबंध संग्रह तथा आलोचनात्मक पुस्तक और अनुवाद भी प्रकाशित है ।

द्वितीय अध्याय व्यंग्य के स्वरूप को लेकर है । यहाँ 'व्यंग्य' शब्द का अर्थ, व्यंग्य की परिभाषा भारतीय और पाश्चात्य विचारकों को मद्दे नजर रखते हुए प्रस्तुत की गई है । इसके उपरांत व्यंग्य के विभिन्न तत्त्व विसंगति, यथार्थता, चरित्रांकन, संवेदनशीलता, गंभीरता, आलोचना, प्रौढ़भाषा, सांकेतिकता, बौद्धिकता, तटस्थता इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है । व्यंग्य के प्रकारों को लेकर विद्वानों में मतभेद है, इसकी स्पष्टता करते हुए व्यंग्य के

प्रमुख पाँच प्रकार चमत्कारिक विनोद वचन, व्याजोक्ति, उपहास, व्याकृति, आक्षेप इत्यादि के स्वरूप की चर्चा यहाँ की गयी है ।

व्यंग्य लेखन की परंपरा का प्रारंभ संस्कृत तथा प्राकृत साहित्य से दर्शाते हुए सूर और तुलसी तक आते-आते हिन्दी व्यंग्य कविता के क्षेत्र में थोड़ा बहुत विकसित होता है । इसके पश्चात् भारतेन्दु युगीन व्यंग्य, द्विवेदी युगीन, शुक्ल युगीन, प्रेमचंद और उसके बाद प्रेमचंदोत्तर, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य की विकासोन्मुख स्थिति को उल्लेखित करते हुए निष्कर्ष दिया गया है ।

तृतीय अध्याय में व्यंग्यकार के सभी व्यंग्य संकलनों में संकलित व्यंग्य रचनाओं की अतिसंक्षेप में विषयवस्तु स्पष्ट की गयी है । इसके साथ ही लेखक की दोनों औपन्यासिक कृतियाँ 'राग दरबारी' तथा 'मकान' की विषयवस्तु को भी संक्षेप में लिया गया है । श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य साहित्य में मिलनेवाले विभिन्न प्रकार के व्यंग्यों को लेकर शेष चार अध्याय लिखे गये हैं ।

समाज विषयक व्यंग्य में समाज का स्वरूप व्यक्त करने के पश्चात् समाज विषयक विभिन्न व्यंग्यों को उदाहरण सहित अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है । व्यंग्यकार की रचनाओं में सामाजिक व्यंग्य के कई रूप मिलते हैं । जैसे अंधविश्वास एवं रीति-रिवाज, सामाजिक वैषम्य और शोषण, सामाजिक प्रतिष्ठा और पाखंड़ शहर और देहाती समाज की तुलना मध्यवर्ग के बाह्याडंबर, फिल्म, जाति-भेद, स्वार्थपरकता तथा परस्पर संदेह, ईर्ष्या, जलन और व्यक्ति का खोखलापन, परिवार नियोजन, डिनर डिप्लोमेसी, सम्बन्धों का बदलाव, नारी शोषण, निष्ठा, भ्रष्टाचार, उच्चवर्ग बनाम नैतिकता की सड़ांध, मध्यवर्गीय लोगों का शौक, पर्यावरण, मनुष्य स्वभाव, महँगाई, खोखली परंपराओं, वर्तमान सीरियल, वर्तमान व्यवस्था आदि मुद्दों को लेकर श्रीलाल शुक्ल जी के व्यंग्य-साहित्य को देखने-परखने का प्रयास किया गया है । अंत में निष्कर्ष दिया गया है ।

पंचम अध्याय में सर्वप्रथम राजनीति को परिभाषित किया गया है, बाद में सत्तालोलुपता, नेता चरित्र, नेताओं की असंतुष्टि तथा दलबदल, शिष्टाचार का अभाव, नेताओं के झूठे वचन, नेताओं की लालची प्रकृति, नेताओं के आपसी झगड़े, चापलूसी, पराजित नेता की कथा, प्रतिष्ठित राजनेताओं तथा अवसरवादी राजनीतिज्ञों आदि विषयों को लेकर व्यंग्यकार के व्यंग्य साहित्य का मूल्यांकन किया गया है । इसके अतिरिक्त इस अध्याय में धर्म आदि विषय पर भी लेखक की व्यंग्य रचनाओं पर गौर किया गया है ।

राजनीति के अतिरिक्त प्रशासन तंत्र को भी व्यंग्यकार ने आड़े हाथों लिया है । प्रशासन तंत्र का भ्रष्टाचार, घूसखोरी, नौकरशाही, न्यायालय, कर्तव्यहीनता, घोटाले देश की दुर्दशा, पुलिस व्यवस्था, डाकुओं पर भी प्रहार किया है । यहाँ इन सब पर उदाहरण सहित दृष्टिपात किया गया है ।

षष्ठ अध्याय शैक्षिक विषयक व्यंग्य का है । इसके अंतर्गत वर्तमान शिक्षा की स्थिति का उल्लेख करते हुए कवि सम्मेलन, शिक्षा संस्थान, शिक्षा का स्तर परीक्षा पद्धति, अध्यापकों की निरीहता, आचार्यों की कार्यनिष्ठा, छात्रों की अनुशासनहीनता, शिक्षा-क्षेत्र की अन्य विसंगतियाँ, स्वार्थपरता और कलह, बिकाउ पदवियाँ, काव्य गोष्ठियाँ आदि मुद्दों पर लेखक के व्यंग्यबाण कैसे चले हैं, इसे अभिव्यक्ति प्रदान की गयी है । अंत में निष्कर्ष दिया गया है ।

सप्तम अध्याय में भूमिका स्वरूप संस्कृति की परिभाषा दी गयी है । संगीत कला, चित्रकला, मूर्तिकला, दुःख, परोपकार तथा वेदान्त दर्शन बनाम जीवन की विसंगतियों, यात्रा, नगरीय संस्कृति, पश्चिमी संस्कृति का कुप्रभाव इत्यादि विषयों को उदाहरण सहित देखा गया है ।

साहित्य जगत विषयक व्यंग्य में साहित्य किसे कहते हैं इसे अभिव्यक्ति करने के उपरांत मनोरंजन, साहित्यकार आदि के बारे में श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्यों को परखा गया है ।

आठवाँ अध्याय अभिव्यंजना शिल्प (भाषा-शैली) को उजागर करता है । व्यंग्य की भाषा कैसी होनी चाहिए इसे स्पष्ट करने के अनन्तर श्रीलाल जी

के समग्र व्यंग्य साहित्य को पात्रानुकूल भाषा प्रयोग, वाक्य संरचना, आलंकारिक भाषा प्रयोग, भाषा की लाक्षणिकता (इसके अंतर्गत मुहावरों लोकोक्तियाँ) शब्द योजना (इसके अंतर्गत संस्कृत के तत्सम शब्द, युग्म शब्द, अंग्रेजी शब्द, अंग्रेजी वाक्य प्रयोग, अरबी-फारसी शब्द, स्थानीय भाषा के विशिष्ट शब्द गीत) इत्यादी की दृष्टि से मूल्यांकित करने का प्रयत्न किया गया है ।

शैली का स्वरूप स्पष्ट करने के उपरांत व्यंग्यकार की रचनाओं में मिलनेवाले भिन्न-भिन्न शैली रूप यथा वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, पत्र, संवाद, संस्मरणात्मक, प्रतीकात्मक, प्रश्न, व्यंग्य, काव्यात्मक, तुलनात्मक, रिपोर्ताज, किस्सागोई, बिम्ब या चित्र इत्यादि शैलीयों को उदाहरणसह प्रस्तुत किया गया है और अंत में निष्कर्ष दिया गया है ।

उपसंहार नवम अध्याय में समस्त अध्यायों का संक्षिप्त अवलोकन किया गया है । साथ ही भावी संभावनाओं की ओर भी दृष्टिपात किया गया है ।

महाशोध प्रबंध के अंत में संदर्भिका के अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाएँ आदि का नामोल्लेख कर शोध प्रबंध का समापन किया गया है ।

धन्यवाद ज्ञापन :

प्रस्तुत महाशोध प्रबंध श्रद्धेया डॉ.विमलेश तेवतिया के मार्गदर्शन में लिखित है । अपनी अपार व्यस्तता के बीच प्रतिक्षण अध्ययन की प्रामाणिकता को न केवल परखा वरन समय समय पर मुझे सचेत भी किया है । यही उनका अपनत्व है । मैं सादर कृतज्ञतापूर्वक उनका धन्यवाद ज्ञापन करता हूँ ।

पूज्य मेरे माता-पिता, भाई-भाभी तथा मेरी जीवनसंगीनी ने सदैव मेरा हौसला बढ़ाया है । इन सबका मैं हृदय से ऋणी रहूँगा ।

कोलेज के प्राचार्य डॉ.पी.एम.जलसण वाला साहब, उपाचार्य जे.आई. शाह, सरस्वती वनविद्या मंडल के प्रमुख श्री रंछीभाई चौधरी सभी का मैं

हार्दिक आभारी हूँ । जिन्होंने मुझे हमेशा प्रेरित व प्रोत्साहन किया ।

हिन्दी विभाग के सहकर्मिओं में डॉ.वासंतीबहन पटेल, डॉ.भानुप्रसाद चौधरी, डॉ.कल्पेश प्रजापति, प्रा. वजुभाई चौधरी, कोलेज के ग्रंथपाल श्री विनुभाई गावीत तथा श्री अनिल गावीत आदि का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस पथ पर अग्रसर होने को प्रोत्साहित किया ।

वी. पी. बुकसेलर एन्ड प्रकाशक, कानपुर के मनोज दीक्षित का आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने मुझे जल्द से जल्द श्रीलाल शुक्ल का साहित्य उपलब्ध करवाया था ।

उन रचनाकारों तथा साहित्यकारों का ऋण स्वीकार करता हूँ जिनकी सर्जनात्मक और समीक्षात्मक पुस्तकों से हमने प्रस्तुत महाशोध प्रबंध का आधार ग्रहण किया है ।

अंत में प्रस्तुत शोध-कार्य के लिए जिन विद्वानों तथा महानुभावों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मुझे सहयोग एवं आशीर्वाद प्रदान किए हैं, उन सबका मैं कृतज्ञ हूँ ।

अस्तु ।

स्थल :
दिनांक : / /२०१४

शोधार्थी

(प्रा. विनुभाई वी. मकवाणा)

संदर्भिका एवं परिशिष्ट

(क) आधार ग्रंथ

क्रम	किताब	लेखक/संपादक	प्रकाशक
१	अंगद का पाँव	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली सं. १९८८
२	यहाँ से वहाँ	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली तृ.सं. १९८४
३	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं. १९७९
४	उमरावनगर में कुछ दिन	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.१९९३
५	कुछ जमीन पर कुछ हवा में	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.१९९५
६	आओ बैठ ले कुछ देर	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.१९९५
७	अगली शताब्दी का शहर	श्रीलाल शुक्ल	किताब घर, १९९६
८	जहालत के पचास साल	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली द्वि.सं.२०१०
९	खबरों की जुगाली	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.२००६
१	राग दरबारी	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली १९९३
२	मकान	श्रीलाल शुक्ल	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पांचवी आवृत्ति १९९५

(ख) सहायक ग्रंथ (हिन्दी व संस्कृत)

क्रम	किताब	लेखक/संपादक	प्रकाशक
१	श्रीलाल शुक्ल : एक अध्ययन	डॉ.सुरेश पटेल	साधना प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.२००९
२	श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों का शिल्प विधान	डॉ.पी.वी.कोटमे	चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.२००४
३	हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य व्यंग्य	डॉ.बालेन्दुशेखर तिवारी	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.१९७८
४	हिन्दी साहित्य में हास्य व व्यंग्य	डॉ.प्रेमनारायण टंडन	हिन्दी साहित्य भंडार, लखनउ प्र.सं.१९६७

क्रम	किताब	लेखक/संपादक	प्रकाशक
५	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	श्री अमृतलाल नागर	ज्ञानभारती प्रकाशन दिल्ली, प्र.सं.१९७७
६	आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य	डॉ.वीरेंद्र मेहंदीरता	रिसर्च पब्लिकेशन इनसोंसल साइंसेस, दिल्ली, १९७६
७	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में व्यंग्य	डॉ.उषा शर्मा	आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली, प्र.सं.१९८५
८	हास्य के सिद्धांत तथा आधुनिक साहित्य	डॉ.प्रेमनारायण दीक्षित	साहित्य भंडार, लखनउ, प्र.सं.१९५४
९	कबीर	आ. द्विवेदी	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं १९८५
१०	हिन्दी साहित्य के विविध वाद	डॉ.प्रेमनारायण शुक्ल	हिन्दी साहित्य भंडार, लखनउ प्र.सं.१९८०
११	हिन्दी नाटय साहित्य में हास्य व्यंग्य	डॉ.सभापति मिश्र	साहित्य रत्नालय, कानपुर, १९८०
१२	तेल की पकौड़ियों	डॉ.प्रभाकर माचवे	ज्ञानोदय प्रकाशन, इलाहाबाद प्र.सं.१९६२
१३	बीभत्स रस और हिन्दी साहित्य	डॉ.कृष्णदेव झारी	राजपाल एण्ड संस, दिल्ली प्र.सं.१९६६
१४	रिमझिम	डॉ.रामकुमार वर्मा	प्र.सं.१९७२
१५	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य	डॉ.शेरजंग गर्ग	भारती प्रिंटर्स दिल्ली, प्र.सं. १९७३
१६	हिन्दी साहित्य में हास्यरस	डॉ.बरसानेलाल चतुर्वेदी	राजपाल एंड संस दिल्ली, प्र.सं. १९५७
१७	कैक्टस के काँटे	डॉ.शंकर पूणतांबेकर	पंचशील प्रकाशन जयपुर १९७४
१८	हिन्दी नाटकों में हास्य तत्त्व	डॉ.शांतारानी	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं.१९८९
१९	श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य निबंध	काका हाथरसी	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं.१९६९
२०	हिन्दी व्यंग्य साहित्य	डॉ.ए.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	शबरी संस्थान, दिल्ली, प्र.सं. १९८९
२१	व्यंग्य के मूलभूत प्रश्न	डॉ.शेरजंग गर्ग	साहित्य भारती, दिल्ली, प्र.सं.१९७३
२२	हिन्दी व्यंग्य उपन्यास	डॉ.राधेश्याम वर्मा	साहित्य भारती, दिल्ली, प्र.सं.१९९०
२३	आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य	डॉ.बरसानेलाल चतुर्वेदी	राजपाल एंड संस, प्र.सं. १९६५
२४	व्यंग्यकार लतीफ घोंघी	डॉ.डांग अलका श्रीकृष्ण	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.२००३
२५	हिन्दी गद्य की नवीन विधायें	राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव	रत्नालय, कानपुर, २००२

क्रम	किताब	लेखक/संपादक	प्रकाशक
२६	एक व्यंग्य यात्रा	रा.वा.पाटील	आलोक संस्कृति अकादमी जलगाँव, १९८७
२७	रागदरबारी कृति से साक्षात्कार	डॉ.चन्द्रप्रकाश दीक्षित	संजय प्रकाश दिल्ली, प्र.सं.२००१
२८	हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में व्यक्ति चेतना	डॉ.आभा भट्ट	जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद १९९४
२९	व्यंग्यात्मक उपन्यास और रागदरबारी	डॉ.नंदलाल फल्ला	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.१९९८
३०	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य में व्यंग्य	डॉ.हरिशंकर दुबे	विकास प्रकाशन, कानपुर प्र.सं.१९६७
३१	हिन्दी कथा साहित्य में हास्य और व्यंग्य	डॉ.रमाशंकर श्रीवास्तव	१९६५
३२	हिन्दी की हास्य व्यंग्य विधा का स्वरूप और विकास	डॉ.इन्द्रनाथ मदान	१९७८
३३	राममनोहर लोहिया	ओंकार शरद	१९८०
३४	व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई	डॉ.भरत पटेल	चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.२००७
३५	निबन्ध निगुम्फ	डॉ.अशोक शाह	पोप्युलर प्रकाशन, सूरत प्र.सं.२००३
३६	मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ	श्री सुदर्शन मजीठिया	पंचशील, जयपुर १९८९
३७	हिन्दी भाष संरचना भाग-२	डॉ.उमेशचंद्र मिश्र	साहित्य रत्नालय, कानपुर, २००९
३८	हिन्दी साहित्य का इतिहास	डॉ.लक्ष्मीनारायण वार्ष्णेय	जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सन् १९९८
३९	अन्वेषण की सहयात्रा	उपेन्द्रनाथ अश्क	कानपुर, १९८८
४०	हिन्दी व्यंग्य एवं व्यंग्यकार	डॉ.बापूराव देसाई	विनय प्रकाशन, कानपुर प्र.सं. १९९७
४१	हिन्दी व्यंग्य विधा : शास्त्र और इतिहास	डॉ.बापूराव देसाई	चिंतन प्रकाशन, प्र.सं.१९९०
४२	व्यंग्य क्या, व्यंग्य क्यों ?	डॉ.श्यामसुंदर दास घोष	सस्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली १९८३
४३	सरल भाषा विज्ञान	डॉ.अशोक शाह	हिन्द बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्र.सं. १९९४
४४	भारतीय काव्यशास्त्र	डॉ.अशोक शाह	जवाहर प्रकाशन, मथुरा प्र.सं.१९९९
४५	मानक हिन्दी : संरचना एवं प्रयोग	डॉ.राम प्रकाश	सम्मान प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. २०००

(ग) सहायक ग्रंथ (अंग्रेजी)

क्रम	किताब	लेखक/संपादक	प्रकाशक
१	एनाटमी ओफ सटायर	गिल्वर्ट हाइएट	
२	आइडिया ओफ कामेडी	जार्ज मेरिडिथ	लन्दन १९४३
३	द आर्ट ओफ सटायर	डेविस वोरचेस्टर	लन्दन १९५१
४	बर्लेस्क	जोन डी. डम्प	लन्दन १९७२
५	एग्लोसरी ओफ लिटररी टर्मस	एम.एच.अब्राहम	न्यूयार्क १९६२

(घ) शब्द कोश :

क्रम	किताब	लेखक/संपादक	प्रकाशक
१	नालन्दा विशाल शब्दसागर	श्री नवलजी	
२	हिन्दी साहित्य कोश	रामखेलावन पांडेय	
३	वृहत अंग्रेजी हिन्दी कोश	डॉ. हरदेव बाहरी	
४	मानक हिन्दी कोश	डॉ.रामचंद्र वर्मा	
५	थर्ड न्यू इन्टरनेशनल डिक्शनरी	वैब्सटर्ड	
६	द आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी	वोल्यूम ९	
७	भार्गव आदर्श हिन्दी शब्दकोश	प्रो.रामचंद्र पाठक	
८	शंकर पूणतांबेकर : व्यंग्य अमरकोश	जयपुर	
९	वृहद हिन्दी शब्दकोश	आबिदरिजजी	रवि पोकेट बुक्स मेरठ

(ङ) पत्र-पत्रिकाएँ

१. सारिका - अगस्त - १९७५

२. तदभव - मार्च - १९९९

३. साप्ताहिक हिन्दुस्तान - १९६८

४. स्वतंत्र भारत - १९८४

५. प्रकाशन समाचार - नवम्बर - २०११

६. सम्बोधन - २०००

७. आलोचना - २०१०

८. आजकल - फरवरी - २०१२

९. प्रकाशन समाचार - फरवरी - २०१३

१०. मधुमती - जुलाई-सितम्बर २००५ से आजतक

११. साहित्य अमृत - व्यंग्य विशेषांक - अगस्त - २०११

१२. साहित्य वीथिका - दिसम्बर २०१२